आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2354 • उदयपुर, शुक्रवार 04 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

अल्ट्राडेंस माइक्रोचिप से चार गुना चलेगी बैटरी

कल्पना कीजिए यदि आपको स्मार्टफोन चार दिन में सिर्फ एक बार चार्ज करना पड़े और लैपटॉप की गति दोगुनी हो जाए। अमरीकी टैंक कम्पनी आइबीएम ने दावा किया कि उसने दुनिया का सबसे छोटा और शक्तिशाली माइक्रोचिप तैयार कर लिया है। यह कम्प्यूटर चिप सिर्फ दो नौनोमीटर की है, यानी करीब डीएनए के एक तंतु की मोटाई बराबर। माइक्रोस्कोपिक चिप में उच्चस्तरीय प्रोग्रामिंग है। एक इंच में 25.4 मिलियन नैनोमीटर होते है। इसके जरिए हर इलेक्ट्रानिक डिवाइस की क्षमता बढ़ाई जा सकती है। आज अधिकांश नई डिवाइस में लगे कम्प्यूटर चिप में ट्रांजिस्टर होते है। जिनकी रेंज प्रीमियम स्मार्टफोन्स में पांच नौनोमीटर से लेकर कुछ पीसी में इस नैनोमीटर तक होती है। इस उपलब्धि की घोषणा बीते सप्ताह आइबीएम की अलबानी, न्यूयार्क स्थित रिसर्च लैब ने की।

कंपनी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डेरियो जिल ने कहा कि यह इंजीनियरिंग की उल्लेखनीय उपलब्धी है। आप पहले इसे लैपटॉप और सेलफोन में देखेंगे और बाद में मेनफ्रेम कम्प्यूटर (अब तक के उपलब्ध कम्प्यूटर में सबसे तीव्र और सबसे शक्तिशाली कम्प्यूटर) में। दुनिया की वित्तीय प्रणालियों की अगिणीतीय संख्या इसी से हल की जाती है। टैक कंपनी का कहना है कि दो नैनोमीटर की इस चिप से कम्प्यूटर की क्षमता 45 प्रतिशत तक बढ़ जाती है और वर्तमान की सात नैनोमीटर वाली चिप की तुलना में ऊर्जा की खपत 75 प्रतिशत तक कम हो जाती है।

आइबीएम के सीई कहते है कि मानव बाल की मोटाई 10,000 नैनोमीटर होती है। आप अंदाज लगा सकते है कि इसके फीचर्स कितने महीन होंगे। यह माइक्रोचिप वर्ष 2024 तक या 2025 में भी बाजार में आ सकेगी।

अब अल्ट्रासाउंड से हो सकेगी ट्यूमर की निगरानी

आइआइटी मद्रास के शोधकर्ताओं ने उपचार निगरानी के लिए अल्ट्रासाउंड आधारित तापमान ट्रैकिंग प्रणाली विकसित की है। एमआरआइ के बजाय अल्ट्रासाउंड आधारित होने से यह सुलभ व सस्ती होगी। इस प्रोजेक्ट के लिए आइआइटी मद्रास रिसर्च टीम को 'सितारे गांधीवादी यंग टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन एप्रिशिएशन– 2020' से सम्मानित किया गया। इस प्रणाली की विशेषता यह है कि शरीर के भीतर उस ऊतक के उष्मा संबंधी अल्ट्रासाउंड संकेत को प्राप्त करने में सक्षम है, जिसे बाहर से माइक्रोवेव एप्लिकेटर या एचआइएफयू से ताप दिया जाता है। थर्मल थेरेपी में एचआइएफयू का उपयोग कैंसर व ट्यूमर के इलाज में पहले से होता आ रहा है। अभी इस उपचार प्रणाली की मॉनिटरिंग एमआरआइ आधारित है। शोध से डेटा व ऊतकों से प्राप्त सभी तरह के संकेत उपलब्ध होंगे। शोध के नतीजे पिछले वर्ष में अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत व प्रकाशित किया।

सेवा–जगत्

निःस्वार्थ सेवा- नारायण सेवा संस्थान

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

केन्या के 98 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग

दिव्यांगजन को कृत्रिम पांव एवं शूज पहनाते हुए डॉक्टर

मोम्बासा सिमेन्ट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हंसमुख भाई पटेल की प्रेरणा से नारायण सेवा संस्थान ने 23 अप्रैल 2021 को मोम्बासा में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया। जिसमें 98 दिव्यांग बन्धु जो अंगविहिन थे उन्हें कृत्रिम अंग हाथ–पैर दिए। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि एसोसिएशन ऑफ फिजीकल डिसएबल्ड इन केन्या की टीम के डॉक्टर ने शिविर में आए दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए। इस दौरान जयेन्द्र हिरानी, रमेश भाई, नारायण भाई एवं उनकी टीम उपस्थित रहे एवं निःशुल्क सेवाएं दी।

शिविर में लाभान्वित दिव्यांगजनों परामर्श देते हुए

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिष्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

हार्ट पेशेन्ट मेरे दादा जी एक शादी में गए, वहां उन्हें सर्दी जुकाम की शिकायत हो गई। कोरोना रिपोर्ट करवाई जो कि पॉजिटिव आई। डॉक्टर्स ने होम आइसोलेट रहकर ट्रीटमेंट लेने की बोला। घर पर केयर करने के लिए हमने नारायण सेवा संस्थान से मदद मांगी, तो हमें हेड्रोलिक बेड और ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करवाया। 10 दिनों में दादाजी रिकेवर हो गए। इस सहयोग के लिए संस्थान का आभार।

– प्रेम आहरी, बड़गांव

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

मूर्ख की दोस्ती

एक समय की बात थी एक राजा ने एक पालतू बन्दर को अपने सेवक के रूप में रखना शुरु कर दिया। जहां भी राजा जाता, बन्दर भी उसके साथ जाता। राजा के दरबार में उस बन्दर को राजा का पालतू होने के कारण कोई रोक–टोक नहीं थी। गर्मी के मौसम में एक दिन राजा अपने शयन कक्ष में विश्राम कर रहा था। बन्दर भी शयन कक्ष के पास बैठकर राजा को एक पंखे से हवा कर रहा था। एभी एक मक्खी आई और राजा के सीने पर आकर बैठ गई। जब बन्दर ने उस मक्खी को बैठे देखा तो उसने उसे उड़ाने का प्रयास किया। हर बार वो मक्खी उड़ती और थोड़ी देर बाद फिर राजा के सीने पर आकर बैठ जाती।

यह देखकर बन्दर गुस्से से लाल हो गया। गुस्से में उसने मक्खी को मारने की ठानी। वह बन्दर मक्खी का मारने के लिए हथियार ढूंढ़ने लगा। कुछ दूर ही उसे राजा की तलवार दिखाई दी। उसने वह तलवार उठाई और गुस्से में मक्खी को मारने के लिए पूरे बल से राजा के सीने पर मार दी। इससे पहले की तलवार मक्खी को लगती, मक्खी वहां से उड़ गई। बन्दर के बल से किए गए वार से मक्खी तो नहीं मरी मगर उससे राजा की मृत्यु अवश्य हो गई।

गंगा शहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी लोढा परिवार ने पेश की मिशाल

पुत्र की शादी में खर्च नहीं कर, दिव्यांगों के ऑपरेशन का लिया संकल्प

नारायण सेवा संस्थान बनी प्रेरणा का स्रोत

बीकानेर। गंगाशहर निवासी व गुवाहाटी प्रवासी समाजसेवी मानमल लोढा ने अपने पुत्र नितेश लोढा की शादी को वृहद स्तर पर न करके एक नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दिव्यांग का ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया है। नारायण सेवा संस्थान बीकानेर के प्रेरक कमल लोढा ने बताया कि गुवाहाटी के व्यवसायी मानमल लोढा ने बताया कि उत्सव के अवसर अनेक मिल जाएंगे लेकिन इस विकट दौर में सेवा धर्म निभाना जरूरी है।

गौरतलब है कि नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांग ऑपरेशन कर चुकी है। कोरोना काल में 50,000 परिवारों को अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

सम्पादकीय

सामाजिक सेवा मनुष्य का कर्तव्य है। सही में कहें तो यह ऋणमुक्ति का एक उपाय है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह माता–पिता से पालित होता है किन्तु उसके सीखने का क्रम समाज से ही विकसित होता है। यह ठीक है कि पहली गुरु माँ होती है पर समाज भी व्यक्ति के लिये प्रारंभिक पाठशाला ही है। समाज के सहयोग व सदाशयता से ही वह कई बातें, आदतें, व्यवहार सीखता है। उसका वातावरण, पर्यावरण उसे कई बातें सिखाता है। यह ज्ञान हरेक व्यक्ति पर समाज का ऋण है। इस ऋण से मुक्ति के लिये जब भी अवसर मिले तो व्यक्ति को प्रयास करना ही चाहिये।

ऋण से मुक्त हुए बिना जीवन से भी मुक्ति संभव नहीं है। ऐसी दशा में समाज का ऋण भी व्यक्ति को उतारना ही चाहिये। सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिये उसे अपने स्वभाव व रूचि के अनुसार सामाजिक सेवा का क्षेत्र चुनना चाहिये। वह शिक्षा, चिकित्सा, प्रेरणा अर्थ या कुछ भी हो सकता है।

कुछ काव्यमय

देव, पितृ व गुरु ऋण
सदियों से माने गये हैं।
पर सामाजिक ऋण के
विचार भी नहीं नये हैं।
इनसे मुक्त होकर ही
हम पूर्णता पा सकते हैं।
ईश्वर के चरणों में
उऋण होकर जा सकते हैं।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सेवा महायज्ञ में आहुति

परमार्थ की भावना जब उत्पन्न होती है, तो अपना सब कुछ देने को तत्पर हो जाती है। जीवन साथी का सहयोग मिलने पर यह और भी स्तुत्य हो जाती है। माघ विद्वान कवि थे एवं प्रतिभावान भी। अपनी अद्भुत काव्य शक्ति के बल पर उन्होंने कमाया भी बहुत। इतने पर भी वे कभी सम्पन्न न बन सके। जो हाथ आया वह अभावग्रस्तों, दुःखी–दरिद्रों की सहायता के लिए बिखेर दिया।

एक बार उस क्षेत्र में दुर्भिक्ष पड़ा। कवि ने अपनी सम्पदा बेचकर वहां के दीन–दरिद्रों की अन्नपूर्ति के लिए लगा दिया। मात्र उनका नवरचित काव्य घर में शेष रह गया था। सोचने लगे इसके बदले कुछ पैसा मिला जाये तो उसे भी समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए लगा दिया जाय। माघ और उनकी धर्म पत्नी लम्बी पैदल यात्रा करके राजा भोज के दरबार में पहुँचे। एक अपरिचित महिला द्वारा काव्य, बेचने की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। काव्य के कुछ पृष्ठ उलटते ही राजा दंग रह गया। उन्होंने मुक्त हस्त से उसका पुरस्कार दिया। जो मिला उसे लेकर मार्ग में फिर वही दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र मिले, वहीं से बांटना चालू किया।

आपका यह संस्थान दुर्भिक्ष रूपी पोलियो विकलांगों के लिए जो कर रहा है, वह है– समुद्र में बूंद के समान। इस भगवत कार्य में आपश्री की धनरूपी लक्ष्मी द्वारा आहुति की वैसे ही आवश्यकता है– जैसे दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र में अन्न की। संस्थान के कई दानदाता इस महायज्ञ में सुदूर रहते हुए भी अपनी आहुतियाँ दे रहे हैं –पुण्य का संग्रह कर रहे हैं –यदि आपश्री अभी तक नहीं जुड़ पाये है किसी कारण से तो अभी जुड़ जाइये –अन्तःकरण में उठे विचारों को दबाइये मत। दीजिये –सेवा में अपना सहयोग।

–कैलाश 'मानव'

अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे।

नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया।

एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे।

एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो।

वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेक बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए।

इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें "Father of Direct Marketing" के रूप में जानते हैं।

अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी।

– सेवक प्रशान्त भैया

जरुरी है धैर्य

धैर्य हमारी कमजोरियों को दूर करने में मददगार है। ईश्वर हमें खुद को बदलने के लिए समय देते हैं। वे हमारे लिए हमेशा नई संभावनाओं को खोलते है। जब हम गिरते है, तो वे हमें उठाते हैं। जब हम रास्ता भटकने के बाद ईश्वर के पास लौटते हैं, तो वे खुली बाहों से हमारा इंतजार करते हैं। उनके प्यार को नहीं तौला जा सकता, ईश्वर हमें नए सिरे से शुरूआत करने की हिम्मत देते हैं। धैर्य कमजोरी का संकेत नहीं हैं, जब सब खो जाए तो भी अपने अंदर की अच्छाई को बनाए रखें। थकान और बैचेनी को दूर करते हुए आगे बढ़ते रहें। यह भी हो सकता है कि हमारे जीवन मे आशा धीरे–धीरे घटती चली जाए। फिर भी हमें धैर्य रखना होगा और ईश्वर पर भरोसा रखना होगा, क्योंकि वे सबका ध्यान रखते हैं। अपने जीवन में हतोत्साहित होने की बजाय, इसे याद रखने से हमें अपने लक्ष्य के लिए डटे रहने और अपने सपनों को फिर से जीवित करने में मदद मिल सकती है। कोई भी निर्णय जल्दबाजी मे नहीं किया जाना चाहिए। शांति को बनाये रखने के लिए और स्थितियों को सुलझाने के लिए बेहतर समय की प्रतीक्षा करने की आवश्कता होती है। इसलिए हमेशा धैर्य को बनाएं रखें।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सहारनपुर में पोस्ट ऑफिस संचालन की विभिन्न विधियों के बारे में ट्रेनिंग दी गई। भत्ते के रूप में सिर्फ 12 रू. मिलता था जिसमें रहना खाना सब करना पड़ता था।

कैलाश के लिये इस तरह के अभावों में दिन व्यतीत करना कोई नई बात नहीं थी। सहारनपुर में तीन महीने व्यतीत करने के पश्चात् 15 दिन कलकत्ता जाना था। तार भेजने व प्राप्त करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण लेना था। कलकत्ता बड़ा शहर था, वहां 12 रू. में गुजारा कैसे होगा यह सोच सोच कर ही कैलाश घुलता रहता था। तभी उसे भीलवाड़ा के अपने मित्र हंसमुख की याद आ गई।

भीलवाड़ा में चेतन पान वाले की दुकान बहुत प्रसिद्ध है। वहीं सदा हंसमुख रहने वाले इस व्यक्ति से कैलाश की मुलाकात हुई। कैलाश ने उसकी प्रसन्नता का रहस्य पूछा तो उसने बताया कि वह गायत्री की उपासना करता है। कैलाश ने भी उससे गायत्री मंत्र सीख लिया और धीरे धीरे दोनों में घनिष्ठता बढ़ गई। हंसमुख का एक मित्र कलकत्ता रहता था।

कैलाश ने हंसमुख को अपनी परेशानी बताई तो उसने आश्वस्त किया कि चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है, वह अपने मित्र को फोन कर रहा है, उसके घर ही जाकर ठहर जाना। कैलाश कलकत्ता में हंसमुख के मित्र के घर पहुंचा तो उसके आश्चर्य का पारावार नहीं रहा। मित्र अत्यन्त सम्पन्न था। वह भी गायत्री भक्त और शांतिकुंज हरिद्वार से जुड़ा था।

मित्र करोड़पति था तो भी अपनी पुत्री का विवाह अत्यन्त सादगी के साथ सिर्फ 5 हजार रू. के व्यय में शांतिकुंज हरिद्वार में सम्पन्न किया। कैलाश इनसे मिलते ही प्रभावित हो गया और शांतिकुंज के प्रति उसकी आस्था और प्रबल हो गई। अब उसके मन में शांतिकुंज जाने की ललक प्रबल हो गई।

अंश - 26